

TYBA कोचिंग सेंटर (TYBA Coaching Center)

राजस्थान CET (सीनियर सेकेंडरी लेवल 10+2) सम्पूर्ण पाठ्यक्रम नोट्स श्रृंखला

विषय: राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति

अध्याय 1: राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं एवं पुरातात्विक स्थल

हेल्पलाइन: 6367029449

1. अध्याय परिचय एवं परीक्षा महत्व (Chapter Overview & Exam Relevance)

Ancient civilizations and archaeological sites represent one of the highest-weightage topics in the Rajasthan Staff Selection Board (RSMSSB) Senior Secondary Common Eligibility Test (CET). Questions frequently test excavator names, river locations, geographical districts, and specific material evidence found during excavations.

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड (RSMSSB) द्वारा आयोजित CET सीनियर सेकेंडरी परीक्षा में प्राचीन सभ्यताओं से कम से कम 2 से 3 सवाल हर बार पूछे जाते हैं। बोर्ड का फोकस आमतौर पर इस बात पर रहता है कि कौन सी सभ्यता किस जिले में है, किस नदी के किनारे विकसित हुई, उसकी खोज और खुदाई किसने की, और वहां से क्या अनोखी चीजें (साक्ष्य) मिली हैं। इन नोट्स में हर पॉइंट को पहले अंग्रेजी और फिर एकदम सरल बोलचाल वाली हिंदी में समझाया गया है ताकि कोई भी बात छूटे नहीं।

2. कालीबंगा सभ्यता (Kalibangan Civilization)

Geographical Location & River: Kalibangan is located in Hanumangarh district of Rajasthan (formerly in Sri Ganganagar district) along the dry bed of the ancient Ghaggar river, which is identified with the mythological Saraswati and Drishadvati rivers.

भौगोलिक स्थिति एवं नदी: कालीबंगा राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में स्थित है। पहले यह श्रीगंगानगर में था, इसलिए पुरानी किताबों में गंगानगर लिखा मिलता है, लेकिन अब सही उत्तर हनुमानगढ़ है। यह प्राचीन घग्घर नदी के बाएं तट पर है, जिसे प्राचीन काल में सरस्वती या दृषद्वती नदी कहा जाता था। स्थानीय भाषा में घग्घर को 'नाली' या 'मृत नदी' (Dead River) भी कहते हैं।

Etymology: The term 'Kalibangan' literally translates to 'Black Bangles' (Kali = Black, Bangan = Bangles in Punjabi and Rajasthani dialects). A large number of black terracotta and shell bangles were discovered here.

नामकरण: 'कालीबंगा' शब्द सिंधी/पंजाबी और राजस्थानी बोली से बना है, जिसका सीधा मतलब होता है—'काले रंग की चूड़ियां'। खुदाई के दौरान यहां मिट्टी और शंख की बनी ढेर सारी काले रंग की चूड़ियां मिली थीं, इसी वजह से इसका नाम कालीबंगा पड़ा।

Discovery & Excavation History: Italian indologist Luigi Pio Tessitori was the first to identify archaeological remains here before independence. The site was officially discovered in 1952-1953 by Amlanand Ghosh. Extensive scientific excavation was conducted between 1961 and 1969 by B.B. Lal (Braj Basi Lal) and B.K. Thapar (Balkrishna Thapar), along with J.P. Joshi and M.D. Khare.

खोज एवं उत्खनन का इतिहास: आजादी से पहले इटली के विद्वान लुइगी पियो तेस्सीतोरि (L.P. Tessitori) ने इस टीले की पहचान की थी। लेकिन आजादी के बाद सन 1952-53 में अमलानंद घोष ने इसकी विधिवत खोज की। इसके बाद 1961 से 1969 के बीच बी.बी. लाल (ब्रजवासी लाल) और बी.के. थापर ने बड़े पैमाने पर खुदाई करवाई। इनके साथ जे.पी. जोशी और एम.डी. खरे भी सहयोगी रहे।

Key Discoveries & Unique Archaeological Evidence:

- **Ploughed Agricultural Field:** The world's earliest evidence of a ploughed field belonging to the pre-Harappan period was found in the south-east part of the settlement. Grid-pattern furrows prove that two crops were grown simultaneously (mustard in wider rows and gram in closer rows).
- **Fire Altars (Agni Vedis):** Seven fire altars were found on a raised platform, containing ash, charcoal, and animal bones, indicating ritual fire worship and animal sacrifice.
- **Earliest Evidence of Earthquake:** Geological faults and cracked mud-brick walls dating to around 2600 BCE prove the earliest recorded earthquake in world history, which likely disrupted the settlement.
- **Wooden Drainage System:** Unique hollowed wooden logs were used as water drainage pipes alongside mud-brick drains, a feature not seen in standard Harappan brick drainage.

- **Cranial Surgery (Trepanation):** A child's skull was discovered containing 6 drilled holes with traces of bone healing, providing the earliest proof of trepanation / brain surgery in prehistoric India.
- **Mesopotamian Cylindrical Seal:** A cylindrical seal typical of Mesopotamian civilization was unearthed, proving direct overseas or overland trade relations.
- **Building Architecture & "Deen-Heen Basti":** Houses were built of sun-dried mud bricks in standard 4:2:1 ratio (30 x 15 x 7.5 cm). Because baked bricks were rarely used in residential houses, archaeologist Dasharatha Sharma described Kalibangan as a "Deen-Heen Basti" (impoverished/poor settlement) and termed it the "Third Capital of the Harappan Empire".
- **Burial Practices:** Three distinct burial methods were documented: extended inhumation (पूर्ण समाधीकरण), circular pit / fractional burial (आंशिक समाधीकरण), and urn burial / cremation remains (दाह संस्कार). A double burial (युग्म शवाधान) was also unearthed.

कालीबंगा से मिले प्रमुख साक्ष्य (जो परीक्षा में सीधे पूछे जाते हैं):

- **जुता हुआ खेत:** दुनिया में हल से जुते हुए खेत का सबसे पुराना साक्ष्य यहीं से मिला है। यह बस्ती के दक्षिण-पूर्व में मिला। इसमें ग्रिड पैटर्न पर दो फसलें एक साथ उगाई जाती थीं—दूर वाली लाइनों में सरसों और पास वाली लाइनों में चना।
- **सात अग्निवेदिकाएं (हवन कुंड):** एक चबूतरे पर पंक्तिबद्ध 7 हवन कुंड मिले हैं जिनमें राख, कोयला और हड्डियां मिली हैं, जो बताती हैं कि उस समय यज्ञ और बलि प्रथा प्रचलित थी।
- **भूकंप का पहला प्रमाण:** दीवारों में दरारें और टेढ़े-मेढ़े फर्श मिले हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि लगभग 2600 ईसा पूर्व यहां भूकंप आया था। यह दुनिया में भूकंप का सबसे प्राचीन साक्ष्य माना जाता है।
- **लकड़ी की नाली:** गंदे पानी की निकासी के लिए लकड़ी के खोखले तनों से बनी नालियां मिली हैं। ऐसी लकड़ी की नालियां पूरी सिंधु घाटी सभ्यता में सिर्फ कालीबंगा में ही देखने को मिलती हैं।
- **कपाल छेदन (शल्य चिकित्सा / सर्जरी):** एक बालक की खोपड़ी मिली है जिसमें 6 छेद किए गए थे और भरने के निशान थे। इससे पता चलता है कि उस समय के लोग सिर की बीमारी ठीक करने के लिए ऑपरेशन करना जानते थे।
- **मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर:** यहां से मेसोपोटामिया की एक मुहर मिली है, जिससे साफ पता चलता है कि कालीबंगा के व्यापारियों का विदेशी व्यापार चलता था।
- **दीन-हीन बस्ती और कच्ची ईंटें:** यहां ज्यादातर मकान धूप में सुखाई गई कच्ची ईंटों (4:2:1 अनुपात) से बने थे। पक्की ईंटों का उपयोग केवल नालियों और कुओं में हुआ। इसीलिए इतिहासकार दशरथ शर्मा ने इसे 'हड़प्पा साम्राज्य की तीसरी राजधानी' और 'दीन-हीन (गरीब) बस्ती' कहा था।
- **कब्रें एवं शवाधान:** यहां तीन तरह से शवों का अंतिम संस्कार होता था—पूरा शव दफनाना, आंशिक रूप से दफनाना, और कलश में अस्थियां रखकर दफनाना। एक कब्र में महिला और पुरुष का युग्म शवाधान (जोड़ा) भी मिला है।

3. आहड़ सभ्यता (Ahar / Tamravati Nagari)

Geographical Location: Located on the banks of the Ahar (Berach) river, a tributary of the Banas, near Udaipur city. Because of its location in the Banas river basin, the culture is commonly referred to as the 'Banas Culture'.

स्थान एवं नदी: आहड़ सभ्यता उदयपुर शहर के पास आहड़ नदी (बेड़च नदी) के तट पर विकसित हुई। बेड़च आगे जाकर बनास नदी तंत्र में मिलती है, इसलिए इतिहासकारों ने इस पूरी सभ्यता को 'बनास संस्कृति' का नाम दिया है।

Historical Names: In ancient inscriptions of the 10th-11th centuries, it is referred to as *Tamravati Nagari* (City of Copper) due to abundant copper smelting. Locally, the ancient mound is known as *Dhulkot* (Dust Fort / Mound of Sand) and medieval records mention it as *Aghatpur* or *Aghat Durg*.

अन्य नाम एवं पहचान: 10वीं और 11वीं शताब्दी के अभिलेखों में इसे *ताम्रवती नगरी* कहा गया है क्योंकि यहां बड़े पैमाने पर तांबा गलाने और तांबे के औजार बनाने का काम होता था। स्थानीय लोग इस टीले को *धूलकोट* (धूल/रेत का टीला) कहते हैं, और प्राचीन ग्रंथों में इसे *आघाटपुर* या *आघाट दुर्ग* भी लिखा गया है।

Discovery & Excavation: First discovered and excavated in 1953 by Akshay Kirti Vyas. Further systematic excavations were carried out by Ratan Chandra Agrawal (R.C. Agrawal) in 1954-1956, and extensively by Prof. H.D. Sankhalia (Hasmukh Dhirajlal Sankhalia) from Deccan College Pune in 1961-1962.

उत्खननकर्ता: सबसे पहले 1953 में अक्षय कीर्ति व्यास ने यहां खोज और शुरुआती खुदाई की। इसके बाद 1954 से 1956 में आर.सी. अग्रवाल (रतनचंद्र अग्रवाल) ने और 1961-62 में पूना के प्रोफेसर एच.डी. सांकलिया के नेतृत्व में व्यापक खुदाई हुई।

Key Discoveries & Characteristics:

- **Copper Smelting Furnaces:** Smelting furnaces, crucibles, and slag along with copper axes, sheet metal, and chisels were discovered, establishing Ahar as a major copper metallurgical hub between 2000 BCE and 1200 BCE.
- **Black and Red Ware (BRW) Pottery:** The primary identifying pottery of Ahar culture is Black and Red Ware painted with linear geometric motifs in white slip. Hence, it is known as the epicenter of Red and Black pottery in Rajasthan.
- **Banasian Bull:** Terracotta figurines of humped bulls, famously known as the 'Banasian Bull', highlight the religious and agricultural importance of cattle.
- **Joint Family Life (Multi-Hearth Kitchens):** A large dwelling house containing 4 to 6 hearths (chulhas) in a single row was found, with one hearth bearing a human hand palm impression. This indicates large joint families or communal dining.
- **Soakage Ring Wells (Chakrakup Method):** A sophisticated drainage technique where earthen jars/rings were stacked vertically into deep pits for sewage and waste water absorption.
- **Apollo Seal:** A circular seal depicting the Greek god Apollo holding a bow and arrow with a quiver on his back, surrounded by Greek letters, proves trade and contact with the Greco-Hellenistic world.

आहड़ के प्रमुख साक्ष्य एवं विशेषताएं:

- **तांबा गलाने की भट्टियां:** यहां तांबा पिघलाने वाली भट्टियां और तांबे की कुल्हाड़ियां व चपटी छड़ें मिली हैं। इससे साबित होता है कि यह 2000 ईसा पूर्व से 1200 ईसा पूर्व तक तांबा उद्योग का सबसे बड़ा केंद्र था।
- **लाल-काले मृदांड (Black & Red Ware):** आहड़ के लोग लाल और काले रंग के बर्तन बनाते थे जिन पर सफेद रंग से ज्यामितीय चित्रकारी की जाती थी। यह आहड़ संस्कृति का मुख्य ट्रेडमार्क है।
- **बनासियन बुल (Banasian Bull):** पकी हुई मिट्टी (टेराकोटा) से बनी कूबड़ वाले बैल की मूर्ति मिली है, जिसे पुरातत्वविदों ने 'बनासियन बुल' नाम दिया है।
- **संयुक्त परिवार के साक्ष्य:** एक बड़े मकान में एक ही लाइन में 4 से 6 चूल्हे मिले हैं, और एक चूल्हे पर तो इंसान की हथेली का निशान छपा हुआ है। इससे साफ झलकता है कि लोग बड़े संयुक्त परिवार में मिल-जुलकर रहते थे।
- **चक्रकूप पद्धति (गंदे पानी की निकासी):** जमीन में गड्ढा खोदकर मिट्टी के घड़े या रिंग्स एक के ऊपर एक रखकर सोखता गड्ढा बनाया जाता था, जिसे चक्रकूप पद्धति कहते हैं।
- **अपोलो देवता की यूनानी मुद्रा:** एक यूनानी सिक्का मिला है जिसके एक तरफ त्रिशूल और दूसरी तरफ यूनानी देवता अपोलो तीर-तरकश लिए खड़े हैं और यूनानी लिपि में कुछ लिखा है। यह विदेशी व्यापार का पक्का सबूत है।

4. गणेश्वर सभ्यता (Ganeshwar Civilization - Mother of Copper Civilizations)

Geographical Location: Situated in Neem Ka Thana district (formerly part of Sikar district) along the Kantli river in the Torawati region of Rajasthan.

स्थान एवं नदी: गणेश्वर सभ्यता नए नीम का थाना जिले (पहले सीकर जिले में था) के नीम का थाना कस्बे के पास कांतली नदी के उद्गम क्षेत्र में स्थित है। इस क्षेत्र को 'तोरवाटी' क्षेत्र भी कहा जाता है।

Title & Historical Significance: Designated as the "Mother of Copper Age Civilizations" (ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी) and "Pushkar of Archaeology" (पुरातत्व का पुष्कर). Carbon dating places it around 2800 BCE, making it the oldest copper-age site in the Indian subcontinent.

उपनाम एवं महत्व: इसे 'ताम्रयुगीन संस्कृतियों की जननी' और 'पुरातत्व का पुष्कर' कहा जाता है। रेडियोकार्बन विधि से इसकी तिथि लगभग 2800 ईसा पूर्व आंकी गई है, जो इसे भारत की सबसे प्राचीन ताम्रयुगीन सभ्यता बनाती है।

Discovery & Excavation: Discovered and excavated by Ratan Chandra Agrawal (R.C. Agrawal) in 1977, followed by excavation work with Vijay Kumar in 1978-1979.

उत्खननकर्ता: इसकी खोज और खुदाई सन 1977 में आर.सी. अग्रवाल (रतनचंद्र अग्रवाल) ने की। बाद में 1978-79 में विजय कुमार ने भी इनके साथ उत्खनन कार्य पूरा किया।

Key Discoveries & Distinctive Features:

- **99% Pure Copper Tools:** Chemical analysis showed that copper implements contained up to 99% purity. Copper was sourced directly from the nearby Khetri-Singhana copper deposits and supplied to Harappa, Mohenjodaro, and Kalibangan.
- **Copper Fish Hook (मछली पकड़ने का कांटा):** The discovery of copper fishing hooks indicates that the Kantli was a perennial river with abundant aquatic life, and people engaged in regular fishing.
- **Stone Architecture & Stone Flood Dam:** Unlike other contemporary civilizations that used bricks, the houses in Ganeshwar were built entirely of river stones. A massive stone embankment (stone dam) was erected to protect the settlement from river floods.
- **Kapishvarni (Ochre Coloured Pottery - OCP):** The characteristic pottery found here is thin, orange-red Ochre Coloured Pottery (कपिशवर्णी मृत्पात्र).

प्रमुख विशेषताएं एवं साक्ष्य:

- **99% शुद्ध तांबा:** यहां से मिले तांबे के औजारों में तांबे की शुद्धता 99% तक पाई गई है। गणेश्वर के लोग पास की खेतड़ी-सिंघाना की खदानों से तांबा निकालकर कालीबंगा, हड़प्पा और मोहनजोदड़ो तक सप्लाई करते थे।
- **मछली पकड़ने का कांटा:** यहां से तांबे का मछली पकड़ने वाला कांटा (Fish hook) मिला है, जिससे साफ पता चलता है कि कांतली नदी उस समय बारहमासी बहती थी और लोग मछली पकड़ते थे।
- **पत्थर के मकान एवं पत्थर का बांध:** गणेश्वर में ईंटों का बिल्कुल भी इस्तेमाल नहीं हुआ; सारे मकान और चारदीवारी नदी के पत्थरों से बनाई गई थी। बाढ़ के पानी से बस्ती को बचाने के लिए पत्थर का एक बड़ा सुरक्षा बांध भी बनाया गया था।
- **कपिशवर्णी मृद्भांड (OCP):** यहां से गेरुए रंग के मिट्टी के बर्तन मिले हैं जिन्हें पुरातत्व में कपिशवर्णी या Ochre Coloured Pottery कहा जाता है।

5. बैराठ सभ्यता (Bairat / Viratnagar Civilization)

Location & Hills: Located in Kotputli-Behror district (formerly Jaipur district) on the banks of the Banganga river. The archaeological remains are scattered across prominent hillocks: Bijak ki Pahari (बीजक की पहाड़ी), Bhim Dungri (भीम डूंगरी), Ganesh Dungri, and Moti Dungri.

स्थान एवं पहाड़ियां: बैराठ नए कोटपूतली-बहरोड़ जिले (पहले जयपुर जिले में आता था) में बाणगंगा नदी के किनारे स्थित है। यहां के प्राचीन अवशेष चार मुख्य पहाड़ियों पर फैले हैं—बीजक की पहाड़ी, भीम डूंगरी, गणेश डूंगरी और मोती डूंगरी।

Historical Context: In the epic Mahabharata, Bairat was called Viratnagar, the capital of Matsya Mahajanapada ruled by King Virata, where the five Pandavas spent their 13th year of exile incognito (अज्ञातवास). Later, it flourished as a major Buddhist and Mauryan administrative center under Emperor Ashoka.

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: महाभारत काल में इसका नाम विराटनगर था, जो मत्स्य महाजनपद की राजधानी थी। राजा विराट के यहां पांडवों ने अपना एक साल का अज्ञातवास बिताया था। मौर्य काल में सम्राट अशोक के समय यह बौद्ध धर्म और मौर्य प्रशासन का सबसे प्रमुख केंद्र बना।

Discovery & Excavation: First scientific excavation was initiated by Dayaram Sahni in 1936-1937.

Subsequent post-independence excavations were conducted by Neil Ratna Banerjee (N.R. Banerjee) and Kailash Nath Dikshit (K.N. Dikshit) in 1962-1963.

उत्खननकर्ता: बैराठ में सबसे पहला वैज्ञानिक उत्खनन 1936-37 में रायबहादुर दयाराम साहनी ने कराया। इसके बाद 1962-63 में नील रत्न बनर्जी (एन.आर. बनर्जी) और कैलाश नाथ दीक्षित (के.एन. दीक्षित) ने दोबारा बड़े स्तर पर खुदाई की।

Key Discoveries & Historical Remains:

- **Bhabru Rock Edict (भाब्रू शिलालेख):** Discovered in 1837 by Captain Burt on Bijak ki Pahari. In this edict, Emperor Ashoka clearly professes his deep faith in the 'Triratna' of Buddhism—Buddha, Dhamma, and Sangha. This inscription was removed in 1840 and is currently preserved in the Asiatic Society Museum in Kolkata.
- **Circular Buddhist Temple & Monastery:** Remains of a circular brick temple (गोल बौद्ध मंदिर) and a multi-room Buddhist monastery (Vihara) were unearthed at Bijak ki Pahari, representing the earliest structural temple architecture known in India.
- **Silver Punch-Marked & Indo-Greek Coins:** A clay pot wrapped in handwoven cotton cloth contained 36 silver coins, comprising 8 indigenous Punch-marked coins (Dharana/Karshapana) and 28 Indo-Greek coins, of which 16 coins belonged to the famous Indo-Greek ruler Menander (Milinda).
- **Hiuen Tsang's Visit:** Chinese Buddhist pilgrim Xuanzang (Hiuen Tsang) visited Bairat in 634 CE during Harsha's reign, referring to it as '*Po-li-ye-to-lo*' and recording 8 Buddhist monasteries.
- **Huna Invasion Damage:** The Buddhist monasteries at Bairat were brutally destroyed by the Huna conqueror Mihirakula around the early 6th century CE.

प्रमुख साक्ष्य एवं महत्वपूर्ण तथ्य:

- **भाब्रू शिलालेख:** सन 1837 में कैप्टन बर्ट ने बीजक की पहाड़ी से इस शिलालेख की खोज की थी। इसमें सम्राट अशोक ने स्वयं को मगध का राजा कहा और बुद्ध, धम्म व संघ (त्रिरत्न) में अपनी सच्ची आस्था व्यक्त की। सन 1840 में इसे काटकर कलकत्ता (एशियाटिक सोसायटी संग्रहालय) भेज दिया गया, जहां यह आज भी सुरक्षित है।
- **गोल बौद्ध मंदिर एवं स्तूप:** बीजक की पहाड़ी से भारत के सबसे प्राचीन गोल बौद्ध मंदिर और बौद्ध मठ के अवशेष मिले हैं, जो लकड़ी और ईंटों से बने थे।
- **36 चांदी के सिक्के व सूती कपड़ा:** यहां एक मिट्टी के बर्तन में हाथ से बुने सूती कपड़े में लिपटे 36 चांदी के सिक्के मिले। इनमें 8 प्राचीन भारतीय आहत (पंचमार्क) सिक्के और 28 यूनानी (इण्डो-ग्रीक) सिक्के थे, जिनमें से 16 सिक्के राजा मिनेण्डर (मिलिन्द) के थे।
- **ह्वेनसांग की यात्रा:** चीनी यात्री ह्वेनसांग 634 ई. में बैराठ आया था। उसने अपनी पुस्तक 'सी-यू-की' में बैराठ को '**पायात्र**' (Po-li-ye-to-lo) लिखा और बताया कि यहां 8 बौद्ध मठ थे।
- **मिहिरकुल का आक्रमण:** हुण शासक मिहिरकुल ने 6ठी शताब्दी में बैराठ के बौद्ध मठों और मंदिरों को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया था।

6. राजस्थान के अन्य प्रमुख पुरातात्विक स्थल (Other Significant Sites)

सभ्यता स्थल (Site)	जिला (District)	नदी (River)	उत्खननकर्ता (Excavator)	प्रमुख साक्ष्य एवं परीक्षा में पूछे जाने वाले तथ्य
बालाथल (Balathal)	वल्लभनगर, उदयपुर	बेड़च	डॉ. वी.एन. मिश्रा (1993)	11 कमरों वाला विशाल भवन/दुर्ग जैसी संरचना, 4000 वर्ष पुराना मानव कंकाल जिसमें कुष्ठ रोग (Leprosy) का भारत में सबसे प्राचीन साक्ष्य मिला, तांबे के सिक्के और हाथ से बुना कपड़ा।
बागोर (Bagor)	भीलवाड़ा	कोठारी	डॉ. वी.एन. मिश्रा एवं एल.एस. लेशिक (1967-70)	भारत में पशुपालन का सबसे प्राचीन साक्ष्य (मध्य पाषाण काल), महासतियों का टीला, सूक्ष्म पाषाण उपकरण (Microliths) और तांबे के छेद वाले बाण (Needles/Arrowheads)।
गिलुण्ड (Gilund)	राजसमंद	बनास	बी.बी. लाल (1957-58) व ग्रेगरी पोशेल	आहड़ संस्कृति का ही हिस्सा; खास बात यह है कि आहड़ में कच्ची ईंटें थीं लेकिन गिलुण्ड में पक्की ईंटों के साक्ष्य मिले हैं। मिट्टी के खिलौने और प्रस्तर फलक।
सुनारी (Sunari)	नीम का थाना (झुंझुनूं)	कांतली	राजस्थान पुरातत्व विभाग (1980-81)	भारत में लोहा गलाने की सबसे प्राचीन भट्टी के साक्ष्य, लोहे के तीर, कुल्हाड़ी, प्याले और मातृदेवी की मृन्मूर्ति।

सभ्यता स्थल (Site)	जिला (District)	नदी (River)	उत्खननकर्ता (Excavator)	प्रमुख साक्ष्य एवं परीक्षा में पूछे जाने वाले तथ्य
जोधपुरा (Jodhpura)	कोटपूतली-बहरोड़ (जयपुर)	साबी नदी	आर.सी. अग्रवाल एवं विजय कुमार (1972-75)	लोहे के अस्त्र-शस्त्र बनाने की भट्टी, स्लेटी रंग के चित्रित मृद्भांड (PGW), मौर्यकालीन और शुंगकालीन अवशेष। (नोट: नाम जोधपुरा है पर यह जयपुर/कोटपूतली क्षेत्र में है)।
नगरी / माध्यमिका (Nagari)	चित्तौड़गढ़	बेड़च	डॉ. डी.आर. भंडारकर (1904)	प्राचीन शिवि जनपद की राजधानी (माध्यमिका) , वैष्णव (भागवत) धर्म का सबसे प्राचीन घोसुंडी शिलालेख यहीं से मिला, शिवि जनपद के सिक्के मिले।
रंगमहल (Rangmahal)	हनुमानगढ़	घग्घर	डॉ. हन्नारीड (Hanna Rydh - स्वीडिश दल 1952-54)	कुषाणकालीन व गुप्तकालीन सिक्के, गांधार शैली में बनी गुरु-शिष्य की मृण्मूर्ति, लाल पृष्ठभूमि पर काले रंगों की सुंदर चित्रकारी।
रेढ़ (Redh)	टोंक (निवाई)	ढील नदी	दयाराम साहनी व के.एन. पुरी (1938-40)	'प्राचीन भारत का टाटानगर' कहा जाता है क्योंकि यहां से 3075 चांदी के आहत (पंचमार्क) सिक्के मिले हैं जो एशिया में सिक्कों का सबसे बड़ा भंडार है।
नगर / मालवनगर (Nagar)	टोंक (उनियारा)	-	कृष्ण देव (1943)	प्राचीन मालव जनपद की राजधानी (ककॉट नगर) , मालव सिक्के, महिषासुर मर्दिनी की प्राचीनतम मृण्मूर्ति।
तिलवाड़ा (Tilwara)	बालोतरा (बाड़मेर)	लूणी नदी	डॉ. वी.एन. मिश्रा (1967-68)	मध्य पाषाण कालीन सभ्यता, पशुपालन के साक्ष्य, मल्लीनाथ जी का पशु मेला इसी क्षेत्र में लगता है।

7. परीक्षा विशेषांक: याद रखने के शॉर्टकट ट्रिक्स (Smart Revision Memory Nuggets)

★ ट्रिक 1: कालीबंगा का उत्खनन याद रखें

"अमला ने 52 में खोजा, 61 में बीबी ने थापड़ मारा"

- अमला = अमलानंद घोष (1952 में खोज)
- बीबी = बी.बी. लाल एवं थापड़ = बी.के. थापर (1961 से 1969 तक उत्खनन)

★ ट्रिक 2: बैराठ की पहाड़ियां

"बीजक की पहाड़ी पर भीम ने गणेश को मोती दिया"

- बीजक की पहाड़ी, भीम डूंगरी, गणेश डूंगरी, मोती डूंगरी—ये चारों पहाड़ियां बैराठ (कोटपूतली-बहरोड़) में हैं।

★ ट्रिक 3: सबसे प्राचीन साक्ष्य का कन्फ्यूजन दूर करें

- जुता हुआ खेत / भूकंप / शल्य चिकित्सा: कालीबंगा (हनुमानगढ़)
- पशुपालन के सबसे प्राचीन साक्ष्य: बागोर (भीलवाड़ा)
- कुष्ठ रोग का सबसे प्राचीन साक्ष्य: बालाथल (उदयपुर)
- लोहा गलाने की प्राचीनतम भट्टी: सुनारी (नीम का थाना)
- ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी: गणेश्वर (नीम का थाना)
- प्राचीन भारत का टाटानगर: रेढ़ (टोंक)

इकाई 2: राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक दुर्ग एवं स्थापत्य कला (Unit 2: Historical Forts & Architecture)

2.1 चित्तौड़गढ़ दुर्ग (Chittorgarh Fort - 'गढ़ तो चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढ़ैया')

Architectural Profile: Constructed by Maurya king Chitrangada Maurya on the Mesha Plateau (मेसा का पठार, height 616m) at the confluence of Gambhiri and Bedach rivers. It is Rajasthan's largest living fort, covering 28 sq km. It represents all categories of forts except Dhanvan (desert fort), hence termed 'Giri-Jal-Vana Durg'. Bappa Rawal captured it from Man Maurya in 734 CE. Included in UNESCO World Heritage list in 2013 alongside 5 other hill forts of Rajasthan.

स्थापत्य परिचय: चित्रांगद मौर्य ने इसे गंभीरी और बेड़च नदियों के संगम पर मेसा के पठार (ऊँचाई 616 मी.) पर बनवाया था। यह राजस्थान का सबसे बड़ा 'लिविंग फोर्ट' (आवासीय दुर्ग) है। धन्यवन (मरुस्थल दुर्ग) को छोड़कर यह बाकी सभी श्रेणियों (गिरि, जल, वन) में आता है, इसलिए कहावत प्रसिद्ध है—“गढ़ तो चित्तौड़गढ़, बाकी सब गढ़ैया”। 734 ई. में बप्पा रावल ने मान मौर्य को हराकर इस पर अधिकार किया था। 2013 में इसे यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया।

Three Famous Historical Sieges & Jauhars of Chittor:

- 1. First Jauhar (1303 CE):** Sultan Alauddin Khalji invaded Chittor. Maharana Ratan Singh led the battle (Gora and Badal sacrificed their lives). Rani Padmini committed Jauhar with 1600 women. Khalji renamed the fort *Khizrabad* after his son Khizr Khan.
- 2. Second Jauhar (1534-35 CE):** Sultan Bahadur Shah of Gujarat invaded. Rawat Bagh Singh of Deolia led the Saka and was martyred at Padan Pol. Rani Karnavati (mother of Vikramaditya and Udai Singh) committed Jauhar.
- 3. Third Jauhar (1567-68 CE):** Mughal Emperor Akbar besieged Chittor. Maharana Udai Singh retreated to Gogunda. The defense was led heroically by Jaimal Rathore and Patta Sisodia along with Veer Kallaji Rathore (four-armed deity). Akbar ordered a general massacre (Qatl-e-Aam). Phool Kanwar committed Jauhar.

चित्तौड़गढ़ के तीन प्रसिद्ध ऐतिहासिक साके व जौहर:

- 1. प्रथम साका (1303 ई.):** अलाउद्दीन खिलजी का आक्रमण। राणा रतन सिंह के नेतृत्व में केसरिया हुआ (गोरा और बादल वीरगति को प्राप्त हुए)। रानी पद्मिनी ने 1600 वीरांगनाओं के साथ जौहर किया। खिलजी ने जीतकर दुर्ग का नाम अपने बेटे के नाम पर **खिज्राबाद** रखा।
- 2. द्वितीय साका (1534-35 ई.):** गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह का आक्रमण। देवलिया के रावत बाघ सिंह ने पाडन पोल पर लड़ते हुए शहादत दी। रानी कर्मावती ने विशाल जौहर का नेतृत्व किया।
- 3. तृतीय साका (1567-68 ई.):** मुगल बादशाह अकबर का आक्रमण। राणा उदयसिंह गोगुंदा चले गए और किले की कमान वीर जयमल राठौड़ व फत्ता सिसोदिया को सौंपी। चार हाथों वाले लोक देवता वीर कल्लाजी राठौड़ लड़े। फत्ता की पत्नी फूलकंवर के नेतृत्व में जौहर हुआ। अकबर ने विजय के बाद 30,000 निर्दोष लोगों का कत्लेआम कराया।

Monuments inside Chittorgarh:

- **Vijay Stambha (Kirti Stambha):** Built by Maharana Kumbha (1440-1448) to commemorate victory over Mahmud Khalji of Malwa in the Battle of Sarangpur (1437). Architect: Jaita and his sons Napa, Poma, Punja. 9 storeys, 122 feet high, 157 steps. Termed 'Encyclopaedia of Indian Iconography' and 'Museum of Sculptures'. Official emblem of Rajasthan Police and Rajasthan Board of Secondary Education (RBSE). First monument in Rajasthan on which a postal stamp was issued (15 August 1949).
- **Jain Kirti Stambha:** Dedicated to 1st Jain Tirthankara Adinath (Rishabhdev). 7 storeys, 75 feet high, built by Digambar Jain merchant Jija Bhagerwala in 12th century.

चित्तौड़गढ़ दुर्ग के प्रमुख स्मारक:

- **विजय स्तम्भ:** महाराणा कुंभा ने मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी पर सारंगपुर युद्ध (1437) की जीत की खुशी में 1440 से 1448 के बीच बनवाया। मुख्य वास्तुकार **जैता और उसके पुत्र नापा, पोमा, पूजा** थे। यह 9 मंजिला, 122 फीट ऊंचा और 157 सीढ़ियों वाला है। इसे 'भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश' और 'मूर्तियों का अजायबघर' कहा जाता है। यह **राजस्थान पुलिस और माध्यमिक शिक्षा बोर्ड** का प्रतीक चिह्न है। राजस्थान का पहला स्मारक जिस पर 15 अगस्त 1949 को डाक टिकट जारी हुआ था।
- **जैन कीर्ति स्तम्भ:** प्रथम जैन तीर्थंकर आदिनाथ जी को समर्पित 7 मंजिला (75 फीट ऊंचा) स्तम्भ, जिसे 12वीं सदी में दिगंबर जैन व्यापारी जीजा शाह बघेरवाल ने बनवाया था।

2.2 कुंभलगढ़, रणथंभौर, मेहरानगढ़, सोनारगढ़ एवं गागरोन

दुर्ग	स्थान व पहाड़ी	निर्माता व उपनाम	प्रमुख ऐतिहासिक विशेषताएं
कुंभलगढ़	राजसमंद (जरगा)	महाराणा कुंभा (शिल्पी: मंडन)	36 किमी लंबी दीवार (भारत की महान दीवार)। कटारगढ़ (सिर की पगड़ी गिर जाए)। महाराणा प्रताप का जन्म (9 मई 1540)।
रणथंभौर	सवाई माधोपुर	चौहान शासक ('बख्तरबंद दुर्ग')	1301 ई. में हमीर देव का साका व रानी रंगादेवी का जल जौहर। त्रिनेत्र गणेश मंदिर, 32 खंभों की छतरी।
मेहरानगढ़	जोधपुर (चिड़ियाटूक)	राव जोधा (1459)	नींव करणी माता ने रखी। किपलिंग: 'परियों व फरिश्तों द्वारा निर्मित'। तोपें: किलकिला, शंभूबाण, गजनी खां।
सोनारगढ़	जैसलमेर (त्रिकूट)	राव जैसल (1155)	पीले पत्थरों से बिना चूने के निर्मित। 99 बुर्ज। ढाई साके (2.5 Sakas) हेतु विख्यात।
गागरोन	झालावाड़ (आहू-कालीसिंध)	डोड राजा बीजलदेव	राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ जल दुर्ग (बिना नींव सीधी चट्टान पर)। संत पीपा जी की गुफा व मीठे शाह की दरगाह।

इकाई 3: 1857 की क्रांति, किसान एवं जनजाति आंदोलन (Unit 3: Revolts & Peasant Movements)

1857 Revolt Outbreak in Rajasthan: 6 military cantonments existed: Nasirabad, Neemuch, Erinpura, Deoli, Beawar, and Kherwara. Soldiers at Beawar and Kherwara did not participate. First outbreak at Nasirabad on 28 May 1857 led by Bakhtawar Singh. At Auwa, Thakur Kushal Singh Champawat defeated British and Jodhpur forces in Battle of Bithoda (8 Sept 1857) and Battle of Chelawas (18 Sept 1857, 'Black and White War'). Political Agent Mock Mason was beheaded and hung at Auwa fort gates. Kota saw a major civilian uprising led by Jaidayal and Mehrab Khan; Major Burton was beheaded.

1857 की क्रांति का विस्फोट: राजस्थान में अंग्रेजों की 6 छावनियां थीं: नसीराबाद, नीमच, एरिनपुरा, देवली, ब्यावर, और खेरवाड़ा। **ब्यावर और खेरवाड़ा के सैनिकों ने क्रांति में भाग नहीं लिया था।** 28 मई 1857 को नसीराबाद से बख्तावर सिंह के नेतृत्व में शुरुआत हुई। आउवा के ठाकुर **कुशल सिंह चंपावत** ने बिथोड़ा (8 सितम्बर) और चेलावास (18 सितम्बर, काले-गोरों का युद्ध) में अंग्रेजों को हराया। पॉलिटिकल एजेंट **मॉक मेसन** का सिर काटकर आउवा के किले पर लटका दिया गया। कोटा में लाला जयदयाल और मेहराब खान के नेतृत्व में जनविद्रोह हुआ और मेजर बर्टन का सिर काटा गया।

Peasant & Tribal Movements:

- **Bijolia (1897-1941, 44 years):** India's longest non-violent peasant struggle against 84 types of taxes (Chanwari tax, Talwar Bandhai tax). Led by Sadhu Sitaram Das, Vijay Singh Pathik (established Uparmal Panch Board in 1917), and Manikya Lal Verma. Publicized by Ganesh Shankar Vidyarthi in 'Pratap' (Kanpur).
- **Begu (1921-23):** Led by Ramnarayan Choudhary. Govindpura firing (13 July 1923) martyred Rupaji and Kripaji Dhakar.

- **Nimuchana (14 May 1925, Alwar):** State forces under Chhaju Singh fired on farmers. Mahatma Gandhi termed it "Dyrism Double Distilled" (दोहरी डायरशाही) and worse than Jallianwala Bagh.
- **Bhagat Movement:** Govind Giri established Samp Sabha (1883). Mangarh Dham massacre (17 Nov 1913, Banswara) martyred 1500+ Bhils, known as the Jallianwala Bagh of Rajasthan.
- **Eki Movement:** Motilal Tejawat ('Bawji') presented 21-point demand letter 'Mewar Pukar' to the Maharana from Matrikundiya (1921).

प्रमुख किसान एवं जनजाति आंदोलन:

- **बिजोलिया (1897-1941, 44 वर्ष):** 84 प्रकार की लाग-बाग (चंवरी कर, तलवार बंधाई) के विरुद्ध भारत का सबसे लंबा अहिंसक आंदोलन। साधु सीताराम दास, विजय सिंह पथिक (1917 में ऊपरमाल पंच बोर्ड की स्थापना), और माणिक्य लाल वर्मा ने नेतृत्व किया। कानपुर के 'प्रताप' अखबार से प्रसिद्ध हुआ।
- **बेगूं (1921-23):** रामनारायण चौधरी के नेतृत्व में। 13 जुलाई 1923 को गोविंदपुरा गोलीबारी में रूपाजी और कृपाजी धाकड़ शहीद हुए।
- **नीमूचाणा (14 मई 1925, अलवर):** कमांडर छाजू सिंह ने अंधाधुंध गोलियां चलाईं। महात्मा गांधी ने 'यंग इंडिया' में इसे 'दोहरी डायरशाही' कहा।
- **भगत आंदोलन:** गोविंद गिरी ने 1883 में सम्प सभा बनाई। 17 नवम्बर 1913 को बांसवाड़ा की मानगढ़ पहाड़ी पर 1500 भील शहीद हुए (राजस्थान का जलियांवाला बाग)।
- **एकी आंदोलन:** मोतीलाल तेजावत ने मातृकुंडिया (चित्तौड़) से 21 सूत्रीय मांग पत्र 'मेवाड़ पुकार' सौंपा।

इकाई 4: राजस्थान का एकीकरण एवं 7 चरण (Unit 4: Integration of Rajasthan)

चरण व संघ	तिथि	शामिल रियासतें	राजप्रमुख व PM/CM	राजधानी व विशेष
1. मत्स्य संघ	18 मार्च 1948	अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली + नीमराणा	राजप्रमुख: उदयभान सिंह, PM: शोभाराम कुमावत	राजधानी: अलवर (के.एम. मुंशी की सिफारिश पर नामकरण)
2. पूर्व राजस्थान संघ	25 मार्च 1948	कोटा, बूंदी, झालावाड़, टोंक, किशनगढ़, शाहपुरा, प्रतापगढ़, झुंजारपुर, बांसवाड़ा + कुशलगढ़	राजप्रमुख: भीम सिंह, PM: गोकुल लाल असावा	राजधानी: कोटा। बांसवाड़ा महारावल चंद्रवीर सिंह: "मैं डेथ वारंट पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ"
3. संयुक्त राजस्थान	18 अप्रैल 1948	पूर्व राजस्थान संघ + उदयपुर (मेवाड़)	राजप्रमुख: भूपाल सिंह, PM: माणिक्य लाल वर्मा	राजधानी: उदयपुर। उद्घाटन पं. जवाहरलाल नेहरू ने किया।
4. बृहत् राजस्थान	30 मार्च 1949	संयुक्त राजस्थान + जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर + लावा	महाराजप्रमुख: भूपाल सिंह, राजप्रमुख: मानसिंह II, PM: हीरालाल शास्त्री	राजधानी: जयपुर (राजस्थान दिवस प्रतिवर्ष मनाया जाता है)।
5. संयुक्त बृहत् राजस्थान	15 मई 1949	बृहत् राजस्थान + मत्स्य संघ	महाराजप्रमुख: भूपाल सिंह, राजप्रमुख: मानसिंह II	डॉ. शंकरराव देव समिति की सिफारिश पर विलय।
6. राजस्थान संघ	26 जनवरी 1950	संयुक्त बृहत् राजस्थान + सिरौही (आबू-देलवाड़ा छोड़कर)	राजप्रमुख: मानसिंह II, CM: हीरालाल शास्त्री	संविधान लागू, 'राजस्थान' नाम विधिवत स्वीकृत।
7. वर्तमान राजस्थान	1 नवम्बर 1956	आबू-देलवाड़ा, अजमेर-मेरवाड़ा, सुनेल टप्पा शामिल; सिरोंज म.प्र. को दिया	प्रथम राज्यपाल: गुरुमुख निहाल सिंह, CM: मोहनलाल सुखाड़िया	राजप्रमुख पद समाप्त। राज्य पुनर्गठन आयोग (फैजल अली)।

इकाई 5: लोक देवता, देवियां, लोक नृत्य व चित्रकला (Unit 5: Folk Culture & Arts)

Panch Pir Folk Deities: Ramdevji (Runecha, author of 'Chaubis Baniya', Kamadiya Panth, Terah Tali dance), Pabuji (Kolu, camel protector, plague healer, Raikas' patron, Phad read with Ravanhattha), Gogaji (Jahar Pir, serpent god, mosque-shaped Gogamedi with Bismillah inscription), Harbhuji (Bengti, worshipped chariot/cart for crippled cows), Meha Ji Mangaliya (horse Kird Kabra). State dance is Ghoomar ('Soul of dances'). Kalbelia dance included in UNESCO (2010, Gulabo Saper). Fire dance (Agni Nritya) performed by Jasnathi siddhas over red-hot coals shouting 'Fateh-Fateh' at Katriyasar, Bikaner. Kishangarh painting 'Bani Thani' painted by Nihal Chand during Sawant Singh's reign is hailed as 'Mona Lisa of India'.

पंच पीर एवं कला-संस्कृति: रामदेव जी (रुणेचा, 'चौबीस बाणियां' के रचयिता, कामिड़िया पंथ, तेरहताली नृत्य), पाबूजी (कोलू, ऊंटों के देवता, प्लेग रक्षक, रावणहत्था पर पड़ का वाचन), गोगाजी (जाहर पीर, गोगामेड़ी पर बिस्मिल्लाह अंकित), हड़बूजी (बेंगटी, पंगु गायों हेतु बैलगाड़ी की पूजा), मेहा जी मांगलिया (घोड़ा किरड़ काबरा)। राज्य नृत्य घूमर है। कालबेलिया नृत्य यूनेस्को (2010) में शामिल (गुलाबो सपेरा)। कतरियासर (बीकानेर) में जसनाथी सिद्धों द्वारा अग्नि नृत्य अंगारों पर 'फतेह-फतेह' बोलते हुए किया जाता है। किशनगढ़ की बणी-ठणी (निहालचंद द्वारा चित्रित) भारत की मोनालिसा कहलाती है।

इकाई 6: राजस्थान का भूगोल, नदियां व प्रशासनिक व्यवस्था (Unit 6: Geography & Polity)

Geography & Administration Highlights: Aravalli Range extends 550 km in Rajasthan (80%), highest peak Guru Shikhar (1722m). Thar desert spans 61.11% area with 40% population. Chambal river originates from Janapav hills (MP) featuring Gandhi Sagar, Rana Pratap Sagar, Jawahar Sagar, and Kota Barrage. Mahi river cuts the Tropic of Cancer twice. Luni river is sweet till Balotra, then saline. Beneshwar Dham at Som-Mahi-Jakham triveni sangam in Dungarpur is the tribal Kumbh. Rajasthan has 200 Legislative Assembly seats. First Governor: Gurumukh Nihal Singh. First elected CM: Tikaram Paliwal (1952). High Court principal seat at Jodhpur, bench at Jaipur. RPSC located at Ghooghra Ghati, Ajmer. Wollastonite & Jasper 100% produced in Rajasthan. Mangala oilfield in Barmer began production on 29 August 2009. Pachpadra Refinery (HRRL) has 9 MMTA capacity (GoR:HPCL = 26:74).

भूगोल एवं राजव्यवस्था के मुख्य बिंदु: अरावली पर्वतमाला राजस्थान में 550 किमी (80%) है, सर्वोच्च चोटी गुरुशिखर (1722 मी.)। थार मरुस्थल 61.11% क्षेत्रफल पर है। चंबल नदी पर 4 बड़े बांध (गांधी सागर, राणा प्रताप सागर, जवाहर सागर, कोटा बैराज) हैं। माही नदी कर्क रेखा को दो बार काटती है। लूणी नदी बालोतरा तक मीठी और आगे खारी हो जाती है। डूंगरपुर के बेणेश्वर में त्रिवेणी संगम (सोम, माही, जाखम) आदिवासियों का कुंभ है। विधानसभा में 200 सीटें हैं। प्रथम राज्यपाल गुरुमुख निहाल सिंह व प्रथम निर्वाचित CM टीकाराम पालीवाल थे। उच्च न्यायालय जोधपुर में व खंडपीठ जयपुर में है। RPSC अजमेर (घूघरा घाटी) में है। वोलास्टोनाइट और जास्पर में 100% एकाधिकार है। बाड़मेर का मंगला तेल कुआं 29 अगस्त 2009 से चालू हुआ। पचपदरा रिफाइनरी में 26% राजस्थान सरकार और 74% HPCL की हिस्सेदारी है।